ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-135-137, YEAR JUNE 2016

समाजवादी चिन्तक स्वामी विवेकानन्द

❑ डॉ0 संध्या

स्वामी विवेकानन्द भारत की महान आत्मा थे जिन्होंने अपनी रचनाओं और भाषणों से जहाँ एक ओर भारतीय सभ्यता और संस्कृति की महानता से वि व के लोगों को परिचित कराया, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज और धर्म में व्याप्त कमियों से भारत के लोगों को परिचित कराकर उसे दूर करने का प्रयास किया। अपने इसी प्रयास के अन्तर्गत, जब उन्होंने भारतीय समाज तथा भारत की दुर्दशा एवं इसके समाधान के सम्बन्ध में जो विचार रखे, उसके आधार पर यह कहना उपयुक्त होगा कि वे एक सामाजिक चिन्तक भी थे। उन्होंने एक अवसर पर कहा था कि 'मैं एक समाजवादी हूँ।' इस घोषणा की व्याख्या करते हुए के0 दामोदरन ने लिखा है कि ''यूरोप में विकसित हो रहे पूँजीवाद की दुष्प्रवृत्ति से विवेकानन्द अत्यधिक निरा ा हुए और वे नये क्रान्तिकारी विचारों की ओर आकर्षित हुए, जो अभी निर्माण की अवस्था में थी। वे रूस के क्रान्तिकारी अराजकतावादी विचारक प्रिंस क्रोपोटिकन से मिले। समाजवादी विचारों ने उनके मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने स्वयं को समाजवादी कहना भाुरू किया।''

लेकिन, विवेकानन्द के समाजवादी विचारधारा के स्रोत को यूरोपीय पूँजीवाद की दुष्प्रवृत्ति में ढूढ़ना ठीक नहीं होगा। स्वामी विवेकानन्द के द र्ान के मुख्यतः तीन स्रोत थेः प्रथम–वेद और वेदान्त, द्वितीय रामकृष्ण परमहंस के साथ उनके सम्पर्क, तृतीय–उनके जीवन का अनुभव। इन तीन स्रोतों के माध्यम से ही विवेकानन्द के दा र्ानिक, धार्मिक, समाजवादी और राष्ट्रीय विचारों के आधार स्तम्भ बने। पुनः विवेकानन्द के राजनीतिक और समाजवादी द र्ान की व्याख्या के लिए तीन रचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा : कोलम्बो से अल्मोड़ा तक व्याख्यान, पूर्व तथा प ि चम और आधुनिक भारत।

विवेकानन्द गरीबों, भाोषितों और निःसहाय लोगों के प्रति असीम संवेदना रखते थे। अपनी इस संवेदना को उन्होंने अपनी पुस्तकों और भाषणों में व्यक्त किया। एक बार एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था 'जब तक मेरे दे ा का एक कुत्ता भी भूखा रहता है, तब तक उनको भोजन देना और उसकी देखभाल करना मेरा कर्तव्य है।'' एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा ''जो लोग भूख से मर रहें हैं, उनकी रक्षा करना ही वेदान्त का सार है।'' इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उन्होंने वेद तथा वेदान्त के आधार पर इस समाजवादी द र्ान को ग्रहण किया कि समाज के सभी लोगों को जीने का हक है और ज्ञानी के लिएर सभी आत्मायें उनकी अपनी आत्मा है। इसी प्रकार के कुछ अन्य वक्तव्य भी विवेकानन्द ने कहा था ''मैं उस भगवान या धर्म को नहीं मानता जो न तो विधवाओं के ऑसू पोंछ सकता है और न अनाथों के मुँह में एक टुकड़ा रोटी ही पहुँचा सकता है।'' पूँजीवादी और भाोषणवादी धनी लोगों की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा 'वे लोग जिन्होंने गरीबों को कुचलकधन पैदा किया है, वे उन 20 करोड दे ावासियों के लिए जो इस समय भूखे और असभ्य बने हुए हैं, यदि कुछ न करें तो वे लोग घृणा के पात्र हैं।'' विवेकानन्द के हृदय में आम जनता के लिए प्रगाढ़ प्रेम था। उन्होंने कहा था ''वि व में एक ही ई वर सभी जातियों के दीन और दरिद्र लोग हैं।'' उन्होंने यह भी कहा ''स्मरण रखिये राष्ट्र झोपड़ियों में रहता है। उनके मुख से निकले ये भाब्द भी क्रान्तिकारी है कि ''भूख से पीड़ित मनुष्य को धर्म का उपदे ा देना हास्यास्पद है, एवं भारत वह दे ा है जहॉ दस या बीस लाख साधु तथा एक करोड़ ब्राम्हण करोड़ों लोगों का खून चूसते हैं।'' इस प्रकार विवेकानन्द ने जाति व्यवस्था की बुराइयों की अनियंत्रित भाब्दों में निन्दा की और ब्राम्हण पुरोहितों को निम्न जातियों के उत्पीड़न के लिए उत्तरदायी ठहराया, जिन्होंने जाति प्रथा एवं अस्पृ यता का मायाजाल बना रखा था।

विवेकानन्द ने भारतीय समाज के भाोषक वर्गों की धूर्तता, कुटिलता और अमानवीय व्यवहार की

❑ असि0 प्रोफेसर, समाज ाास्त्र विभाग, एच0एन0एम0 डिग्री कालेज, झांसी (उ0प्र0) भारत

तीव्र भर्त्सना की। उन्होंने उनकी भी आलोचना की, जो ब्रिटि ा सरकार के सहयोगी बने हुए थे। भारत के उच्च वर्गों एवं भोषकों के विरूद्ध अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा 'भारत के उच्च वर्गों तुम भून्य हो, तुम भविष्य की सारहीन नगण्य वस्तु हो। .... तुम अपने को भून्य में विलीन कर दो और तिरोहित हो जाओ और अपने स्थान पर नये भारत का उदय होने दो। उसे (नये भारत को) हल की मूँठ पकड़े हुए किसानों की कुटिया में से, मछुआरों, मोचियों और भंगियों की झोपड़ियों में से उठने दो। उठने दो, उसे परचून वाले की दुकान से और पकौड़ी बेचने वाले की भट्टी से। उठने दो उसे कारखानों से, हाटों से और बाजारों से। इन साधारणजनों ने हजारों वर्षों तक उत्पीड़न सहा है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें आ चर्यजनक सहन ाक्ति उत्पन्न हो गयी है। उन्हें रोटी का आधा टुकड़ा ही दे दीजिए, फिर तुम देखोगे कि सारा वि व भी उनकी भाक्ति को सम्भालने के लिए पर्याप्त नहीं होगा जिस क्षण तुम तिरोहित हो जाओगे, उसी क्षण तुम नवजाग्रत भारत का उद्घाटन घोष सुनोगे।

उपर्युक्त वक्तव्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विवेकानन्द का यह मानना था कि भाक्ति ाली भारत के भविष्य का निर्माण सामान्य जनता की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उन्नति से ही सम्भव होगा।

वस्तुतः विवेकानन्द को दो अर्थों में समाजवादी कहा जा सकता है। प्रथम, उनमें यह समझने की ऐतिहासिक दृष्टि थी कि भारतीय समाज में दो उच्च जातियों अर्थात् ब्राम्हणों तथा क्षत्रियों का वर्चस्व रहा है और इन दोनों वर्गों ने भारत की गरीब जनता का निरन्तर भोषण किया है। यही कारण था कि सामाजिक समानता का समर्थन किया। यह समानता पुरातनवाद तथा ब्राम्हणों की स्मृतियों में व्याप्त ऊँच–नीच के सिद्धान्त का प्रबल प्रतिवाद प्रस्तुत करती है। इस प्रकार उनका सामाजिक सिद्धान्त तत्वतः समाजवादी है।

वे समाजवादी इसलिए भी थे क्योंकि उन्होंने दे ा के सभी लोगों के लिए 'समान अवसर' सिद्धान्त का समर्थन किया। उन्होंने कहा ''यदि प्रकृति में असमानता है, तो भी सबके लिए समान अवसर होना चाहिए– अथवा यदि कुछ को अधिक और कुछ को कम अवसर दिया जाना चाहिए।'' अन्य भाब्दों में, ब्राम्हण को ि ाक्षा की उतनी आव यकता नहीं है, जितनी चाण्डाल को। यदि ब्राम्हण को एक अध्यापक की आव यकता है, तो चाण्डाल को दस अध्यापक की क्योंकि जिसे प्रकृति ने जन्म से सूक्ष्म बुद्धि नहीं दी है, उसे अधिक सहायता दी जानी चाहिए। पद दलित, दरिद्र और अज्ञानी इन्हीं को अपना देवता समझो। समान अवसर का सिद्धान्त नि चय ही समाजवादी सोच को प्रद ित करता है।

लेकिन, स्वामी विवेकानन्द को उस अर्थ में समाजवादी नहीं कहा जा सकता है, जिस अर्थ में हम किसी आधुनिक राजनीतिक दा ानिक को समाजवादी कहते हैं। हमें कई आधारों पर विवेकानन्द के समाजवादी दृष्टिकोण एवं आधुनिक समाजवादी दृष्टिकोण के बीच अन्तर दिखाई पड़ता है–

पहला, विवेकानन्द को मार्क्स के समान इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या और वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त में वि वास नहीं था, विवेकानन्द आध्यात्मिक पुरूष थे, वेदान्ती थे और वेदान्त पर आधारित किसी भी सामाजिक द ान में वर्ग संघर्ष का कोई भी स्थान नहीं हो सकता था, पुनः उनका दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीयतावादी था। उन्होंने अत्याचार और अन्याय का मुकाबला करने की प्रेरणा दी, लेकिन क्रान्ति या हिंसा को हेय समझा।

दूसरा, उन्होंने अन्य समाजवादी चिन्तकों की तरह वर्गहीन समाज के सिद्धान्त में वि वास नहीं किया। उन्होंने भारत में प्रचलित तत्कालीन जाति प्रथा का विरोध तो किया लेकिन जातियों के उन्मूलन की बात नहीं की। वे भूतकाल की मूल वर्ण व्यवस्था के पक्ष में थे और चाहते थे कि निम्न वर्ग को उच्चतम स्थिति तक उठने का अवसर मिलना चाहिए और यह वेदान्त का सन्दे ा है।

तीसरा, उन्होंने सिर्फ आर्थिक समानता को सर्वाधिक महत्व नहीं दिया, बल्कि उनका आद ार्ा तो

एक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक भ्रातृत्व था जिसमें आर्थिक समाजवाद के अतिरिक्त नैतिक तथा बौद्धिक आत्मीयता भी होगी। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, भारत में किसी भी सुधार के लिए सबसे पहले हमें दे ा में समाजवादी विचारों की बाढ़ लाने से पहले यहॉ आध्यात्मिक विचारों की धारा प्रवाहित होनी चाहिए।

चौथा, विवेकानन्द समाजवाद तथा मार्क्सवाद में आधारभूत अन्तर यह है कि यद्यपि विवेकानन्द ने समाज सुधार पर बल दिया, किन्तु उनका इस बात पर और अधिक बल था कि मनुष्य की आत्मा वसुधातल से आरोहण कर स्वर्णिम देवत्व को प्राप्त कर लें। मार्क्स एक महान यथार्थवादी तथा द्वन्दात्मक भौतिकवादी था, इसलिए उसने हिंसात्मक सामाजिक क्रान्ति का समर्थन किया। साथ ही साथ मार्क्सवाद एक ऐसे द र्शन पर आधारित है, जिसमें घृणा, तिरस्कार, ईष्या आदि की बहुलता है। मार्क्सवाद उस अर्थ में गम्भीर और तात्विक द र्शन नहीं है, जिसमें प्लेटोवाद, वेदान्त, बौद्ध द र्शन या हेगेलवाद है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द का समाजवादी दृष्टिकोण वेदान्ती समाजवाद था, जिसमें हिंसा और वर्ग संघर्ष का कोई स्थान नहीं था। उनके समाजवाद में न्याय, प्रेम, चरित्र की शुद्धता और भ्रातृत्व, सामाजिक समानता, शोषक वर्गों का उन्मूलन आदि बातों का प्रमुख स्थान था। वे भारतीय समाज में प्रचलित जातिगत उत्पीड़न और भूखमरी से भलि–भॉति परिचित थे, और इस समस्या का समाधान तत्कालीन आव यकता समझते थे। यही कारण था कि वे चाहते थे कि–समाजवाद को भी एक बार परख लिया जाये यदि और किसी लिए नहीं तो उसकी नवीनता के लिए ही सही। सुख–दुख का पुनर्वितरण उस स्थिति की अपेक्षा अच्छा ही है, जिसमें कुछ व्यक्ति सदैव दुःख और तो कुछ सदैव सुख का अनुभव करते हैं। इस कश्टमय संसार में प्रत्येक व्यक्ति को कभी न कभी तो सुख प्राप्त होना ही चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दत्त, वी0एन0–'स्वामी विवेकानन्द, पैट्रियाट प्रोफेट, नव भारत पब्लि र्स कलकत्ता, 1954, पृ0 369–70।
2. दामोदरन, के0–'इंडियन थॉटः एक क्रिटिकल सर्वे', पृ0 261–262।
3. स्वामी विवेकानन्द पत्रावली, प्रथम भाग, पृ0 243।
4. वर्मा, वि वनाथ प्रसाद–'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तक', लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 1992, पृ0 131।
5. वर्मा, वि वनाथ प्रसाद–'मार्कसिज्म एण्ड वेदान्त', द वि वभारती क्वार्टर्ली, 1954।

*****